National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040
Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 1347-1349

प्रदत्त कार्य आधारित उपागम के माध्यम से रचना कौशल का विकास

डॉ० बी० एल० श्रीमाली[1], मधु कुमावत[2]
[1] सह–आचार्य (शिक्षा), जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय, उदयपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।
[2] जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय, उदयपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

1. प्रस्तावना

मानव की प्रगति में भाषा विशेष रूप से सहायक रही है। हमारे पूर्वजों के समस्त अनुभव हमें भाषा के माध्यम से ही प्राप्त हुए हैं। हमारे सभी शास्त्र और उनसे होने वाले सभी लाभ भाषा का ही परिणाम है। आत्म निर्देशन हेतु भावों की अभिव्यक्ति के लिए तथा दूसरों के विचारों को ग्रहण करने के लिए मनुष्य को किसी न किसी भाषा का अवश्य प्रयोग करना पड़ता है परंतु अपने अन्तर्द्वन्दों, उद्वेगों तथा मनोभावों का अभिव्यंजन जितनी सुन्दरता, सरलता, स्पष्टता एवं सुगठि त रूप से अपनी मातृभाषा में किया जा सकता है उतना किसी अन्य भाषा में नहीं।

संरचना वाद के आगमन के बाद प्रत्येक भाषा शिक्षण में मूल रूप से चार कौशलों का निर्धारण किया गया हैं– श्रवण, भाषण, पठन एवं लेखन (रचना)। सामान्यतः भाषा शिक्षण का मूल उद्देश्य इन्हीं भाषायी कौशलों का विकास करना माना गया है।

भारत देश में भाषा शिक्षण के क्षेत्र में समय–समय पर विभिन्न विधियों एवं उपागमों का प्रादुर्भाव हुआ लेकिन सामान्यतः यह अनुभव किया जाता रहा है कि विद्यार्थियों में हिंदी में रचना कौशल का विकास करने हेतु प्रत्यक्ष रूप से अपना शिक्षण वर्चसव प्रकट नहीं किया जिसके फलस्वरूप विद्यार्थियों में प्रारंभिक स्तर पर हिंदी में रचना कौशल का वांछनीय विकास नहीं हो पाता है। हिंदी भाषी राज्यों में भी विद्यार्थियों की हिंदी भाषा में अपेक्षित दक्षताओं के विकास नहीं हो पाने के कारण विद्यार्थी उच्च प्राथमिक स्तर पर भी अपने विचारों को हिंदी भाषा में सम्यक एवं शुद्ध रूप से लिखित रूप में अभिव्यक्त नहीं कर पाते हैं। N.C.F. 2005 के अनुसार विद्यार्थी ज्ञान का सृजन स्वयं करता है। वर्तमान में जो विधियाँ एवं उपागम प्रचलित हैं वे एकपक्षीय अनुभूत होती है। यह उपागम विद्यार्थियों को ज्ञान का सृजन करने का अवसर प्रदान करता है। जिसकी यथोचित जाँच इस शोध कार्य के माध्यम से करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोध कार्य में प्रदत्त कार्य आधारित उपागम से तात्पर्य रचना कौशल की उस गतिविधि से है जिसमें विद्यार्थी द्वय समूह अथवा समूह में अध्यापक द्वारा दिए गए प्रदत्त कार्य को करते हैं। हिंदी भाषा में किसी भी विषयवस्तु को पढ़कर सूचनाओं को संकलित कर रचना कौशल के माध्यम से स्थानान्तरित एवं अभिव्यक्त करते हैं तथा रचनात्मक लेखन (कहानी, निबंध, पत्र, सार–संक्षेप, यात्रा वर्णन, संस्मरण, रेखाचित्र, प्रतिवेदन इत्यादि) कौशल का विकास कर सकेंगे।

इसके अंतर्गत व्याकरण के विभिन्न अवयवों यथा– संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया इत्यादि के औपचारिक उपयोग तथा वाक्य संरचना अभ्यास करते हुए शुद्ध वाक्य संरचना करने का अभ्यास करवाया गया जिससे विद्यार्थी इनसे निर्मित वाक्यों के आधार पर हिंदी भाषा में विविध रचनात्मक लेखन कार्य कर सकेंगे।

2. समस्या कथन

प्रदत्त कार्य आधारित उपागम के माध्यम से रचना कौशल का विकास।

3. उद्देश्य

1. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में रचना कौशल के विकास में प्रदत्त कार्य आधारित उपागम की प्रभावशीलता का पता लगाना।
2. प्रदत्त कार्य आधारित उपागम के माध्यम से हिंदी में रचना कौशल के लिए शैक्षिक निहितार्थ का पता लगाना।

4. परिकल्पना

1. प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के पूर्व परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. प्रायोगिक समूह के रचना कौशल के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. नियंत्रित समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5. परिसीमन

प्रस्तुत शोध कार्य उदयपुर शहर के चयनित विद्यालय की आठवीं कक्षा तक सीमित रखा गया।

6. न्यादर्श

न्यादर्श हेतु चयनित विद्यालय की आठवीं कक्षा के 60 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

7. अनुसंधान विधि

इस शोध कार्य हेतु प्रायोगिक शोध विधि का प्रयोग किया गया।

8. शोध आकल्प

तालिका 1

समूह	पूर्व परीक्षण	प्रायोगिक उपचार	पश्च परीक्षण
नियंत्रित समूह	✓	×	✓
प्रायोगिक समूह	✓	✓	✓

9. उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु स्वनिर्मित उपकरण ''प्रदत्त कार्य (टास्क)

आधारित पूर्व एवं पश्च हिंदी भाषा रचना कौशल परीक्षण'' का उपयोग किया गया।

10. सांख्यिकी प्रविधियाँ

1. मध्यमान 2. मानक विचलन 3. टी–परीक्षण

11. तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रदत्त कार्य (टास्क) आधारित व्यूह रचना के माध्यम से उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के पूर्व परीक्षणों में हिंदी में रचना कौशल के विकास के समग्र प्राप्तांकों का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका 2: प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के पूर्व परीक्षणों में हिंदी में रचना कौशल के विकास के समग्र प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

क्र.सं.	समूह	मध्यमान	मानक विचलन	मात्रक त्रुटि	टी– मान	.05/.01 स्तर पर सार्थकता
1.	प्रायोगिक (n=30)	33.53	8.09	3.26	0.58	सार्थक अंतर नहीं
2.	नियंत्रित (n=30)	31.63	15.94			

स्वतंत्रता के अंश (df) = 58
0.05 स्तर पर सारणीमान = 2.00
0.01 स्तर पर सारणीमान = 2.66

व्याख्या

उपर्युक्त तालिका यह दर्शाती है कि प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के पूर्व परीक्षणों में हिंदी में रचना कौशल के विकास के समग्र प्राप्तांकों का मध्यमान तथा मानक विचलन 33.53, 31.63 तथा 8.09 व 15.94 प्राप्त हुआ। मध्यमान के अंतर की सार्थकता के लिए टी–मान निकाला गया। टी–मान 0.58 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता के अंश 58 के .05 स्तर के सारणीमान 2.00 से कम पाया गया, जो यह दर्शाता है कि प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के पूर्व परीक्षण में कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात् दोनों समूह पूर्व परीक्षण समय समान थे।

निष्कर्ष/शून्य परिकल्पना की जाँच

प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के पूर्व परीक्षण में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना (1) ''प्रायोगिक समूह के रचना कौशल के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है'', स्वीकार की जाती है।

1. प्रदत्त कार्य (टास्क) आधारित व्यूह रचना के माध्यम से उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के पश्च परीक्षणों में हिंदी में रचना कौशल के विकास के समग्र प्राप्तांकों का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका 3: प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के पश्च परीक्षणों में हिंदी में रचना कौशल के विकास के समग्र प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

क्र.सं.	स्मूह	मध्यमान	मानक विचलन	मात्रक त्रुटि	टी– मान	.05/.01 स्तर पर सार्थकता
1.	प्रायोगिक (n=30)	59.17	15.92	3.91	5.80	.01 स्तर पर सार्थक
2.	नियंत्रित (n=30)	36.50	14.29			

स्वतंत्रता के अंश (df) = 58
0.05 स्तर पर सारणीमान = 2.00
0.01 स्तर पर सारणीमान = 2.66

व्याख्या

उपर्युक्त तालिका से परिलक्षित होता है कि प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के पश्च परीक्षणों में हिंदी में रचना कौशल के विकास के समग्र प्राप्तांकों का मध्यमान तथा मानक विचलन 59.17, 36.50 तथा 15.92 व 14.29 प्राप्त हुआ। मध्यमान के अंतर की सार्थकता के लिए टी–मान निकाला गया। टी–मान 5.80 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता के अंश 58 के .01 स्तर के सारणीमान 2.66 से अधिक पाया गया, जो यह दर्शाता है कि प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के पश्च परीक्षण के मध्य .01 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया। अतः माना जा सकता है कि नियंत्रित समूह की अपेक्षा प्रायोगिक समूह के पश्च परीक्षण में हिंदी में रचना कौशल का विकास अधिक हुआ है।

निष्कर्ष/शून्य परिकल्पना की जाँच

प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के पश्च परीक्षण में सार्थक अंतर होता है। अतः शून्य परिकल्पना (2) ''प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह के रचना कौशल के पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है'', अस्वीकार की जाती है।

2. प्रदत्त कार्य (टास्क) आधारित व्यूह रचना के माध्यम से उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के प्रायोगिक समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षणों में हिंदी में रचना कौशल के विकास के समग्र प्राप्तांकों का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका 4: प्रायोगिक समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षणों में हिंदी में रचना कौशल के विकास के समग्र प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

क्र.सं.	परीक्षण	मध्यमान	मानक विचलन	मात्रक त्रुटि	टी– मान	.05/.01 स्तर पर सार्थकता
1.	पूर्व परीक्षण (n=30)	33.53	8.09	3.26	7.86	.01 स्तर पर सार्थक
2.	पश्च परीक्षण (n=30)	59.17	15.92			

स्वतंत्रता के अंश (df) = 58
0.05 स्तर पर सारणीमान = 2.00
0.01 स्तर पर सारणीमान = 2.66

व्याख्या

तालिका संख्या 3 द्वारा स्पष्ट होता है कि प्रायोगिक समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षणों में हिंदी में रचना कौशल के विकास के समग्र प्राप्तांकों का मध्यमान 33.53 एवं 59.17 तथा मानक विचलन 8.09 व 15.92 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमान के अंतर की सार्थकता के लिए टी–मान निकाला गया। टी–मान 7.86 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता के अंश 58 के .01 स्तर के सारणीमान 2.66 से अधिक है। अतः दोनों समूहों में .01 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया, जो यह दर्शाता है कि वास्तव में विद्यार्थियों के प्रायोगिक समूह के पश्च परीक्षण में हिंदी में रचना कौशल का विकास हुआ हैं

निष्कर्ष/शून्य परिकल्पना की जाँच

प्रायोगिक समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण में .01 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना (3) ''प्रायोगिक समूह के रचना कौशल के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है'', अस्वीकार की जाती है।

3. प्रदत्त कार्य (टास्क) आधारित व्यूह रचना के माध्यम से उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के नियंत्रित समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षणों में हिंदी में रचना कौशल के विकास के समग्र प्राप्तांकों का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका 5: नियंत्रित समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षणों में हिंदी में रचना कौशल के विकास के समग्र प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान

क्र.सं.	परीक्षण	मध्यमान	मानक विचलन	मात्रक त्रुटि	टी– मान	.05/.01 स्तर पर सार्थकता
1.	पूर्व परीक्षण (n=30)	31.63	15.94	3.91	1.25	सार्थक अंतर नहीं
2.	पश्च परीक्षण (n=30)	36.50	14.29			

स्वतंत्रता के अंश (df) = 58
0.05 स्तर पर सारणीमान = 2.00
0.01 स्तर पर सारणीमान = 2.66

व्याख्या

तालिका संख्या 5 से विदित होता है कि नियंत्रित समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षणों में हिंदी में रचना कौशल के विकास के समग्र प्राप्तांकों का मध्यमान 31.63 एवं 36.50 तथा मानक विचलन 15.94 व 14.29 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्यमान के अंतर की सार्थकता के लिए टी–मान 1.25 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता के अंश 58 के .05 स्तर के सारणीमान 2.00 से कम पाया गया। अतः नियंत्रित समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षणों में हिंदी में रचना कौशल के विकास के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। दोनों समूह लगभग समान पाये गये।

निष्कर्ष/शून्य परिकल्पना की जाँच

नियंत्रित समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः शून्य परिकल्पना (4) ''नियंत्रित समूह के रचना कौशल के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमानों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है'', स्वीकार की जाती है।

12. शैक्षिक निहितार्थ

यह उपागम प्रदत्त कार्य (टास्क) अध्यापकों, शिक्षक–प्रशिक्षक, पाठ्यक्रम निर्माता एवं शैक्षिक संगठनों को मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है जिसके फलस्वरूप हिंदी भाषा शिक्षण में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है।

शिक्षक प्रदत्त कार्य (टास्क) आधारित उपागम की शिक्षण प्रक्रिया से अवगत हो सकेंगे एवं हिंदी शिक्षण के नवाचार की जानकारी प्राप्त कर वे कक्षा–कक्षा में इस उपागम के माध्यम से प्रजातांत्रिक प्रदत्त कार्य आधारित गतिविधियाँ निर्मितवादी शिक्षण कार्य कर छात्रों में पठन एवं रचना कौशल का विकास कर प्रभावशाली बोधगम्य शिक्षण कर सकेंगे।

शिक्षक–प्रशिक्षक भी प्रदत्त कार्य (टास्क) आधारित उपागम की शिक्षण प्रक्रिया से अवगत हो सकेंगे तथा प्रशिक्षणार्थी इस उपागम का प्रयोग कर पाठ योजनाओं का निर्माण कर हिंदी भाषा शिक्षण में नवाचार का प्रयोग कर प्रभावी शिक्षण करने में सफल हो सकेंगे।

12. संदर्भ

1. कपिल, डॉ. एच.के. (2011) ''सांख्यिकी के मूल तत्व'' श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2
2. पाण्डेय, लक्ष्मी नारायण (1988), भाषा विज्ञान, कानपुर : कैक्सटन प्रेस
3. पाण्डेय, डॉ. राम शकल (2010) हिन्दी शिक्षण, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर
4. रायजादा, डॉ. बी.एस., वर्मा, डॉ. वन्दना (2008) ''शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
5. शर्मा, डॉ. आर. ए. (2011) ''शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया'' आर. लाल बुक डिपो, मेरठ
6. सुखिया, एस. पी., मेहरोत्रा, पी.वी. (1997–98) ''शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व'', विनोद पुस्तक भंडार, आगरा
7. तिवारी, भोलानाथ (1994), भाषा विज्ञान, पटना : महल एजेन्सीज
8. व्यास, डॉ. भगवती लाल, डॉ. वेद प्रकाश (2007) हिन्दी शिक्षण के नये आयाम, राधा प्रकाशन मन्दिर, आगरा